मो. 9425131010

डॉ. सुरेश गर्ग

माँ हास्पिटल परिसर विदिशा

गांधी- महात्मा थे या मंजे हुए राजनीतिज्ञ...!

गांधी महात्मा थे या राजनीतिज्ञ...? यह तो वे ही बता सकते हैं ,वह भी उनके पास जाने पर...या फिर तब जब ऊपर से भगवान आकाशवाणी करें !अन्यथा ऐसे प्रश्न उठना और उठाना स्वाभाविक एवं आवश्यक भी हैं। वरना बिना जाने-बूझे किसी भी आत्मा को मात्र कुछ कारनामों के आधार पर महात्मा मान लिया गया तो कोई भी हाथ की कला दिखाने वाला जादूगर या सम्मोहन करने वाला तांत्रिक हमें उसी प्रकार ठगता रहेगा जैसे मजहबी वेषभूषा बना कर बैठे बहरूपिये -बाबा, स्वामी, आचार्य ,महात्मा , फकीर , पादरी ,मुल्ला अपना मायाजाल फैलाकर सदियों से यहाँ करते आ रहे हैं...! कुछ आज भी जेल के अंदर और बाहर देखने को मिल सकते हैं...! पकड़े गये तो चोर वरना साहूकार...! जबकि पैगंबरों ,अवतारों एवं भगवानों तक को अग्नि परिक्षाएँ देकर अपना सत्य स्थापित करना पड़ा है! इसके विपरीत वर्तमान धंधेबाज विज्ञापनी जमाने में जहाँ सब कुछ गारंटी के साथ बिक रहा है,उस में ठगाने के बाद भी कोई व्यक्ति हकीकत उजागर नहीं करता, बल्कि अपनी पूँछ कट जाने पर दूसरे की भी कटवा कर उसे अपनी बिरादरी में शामिल करने का प्रयास करता है। ताकि वह अकेला पूँछ कटा नज़र नहीं आये...!

क्या रावण और उसके अनुयायी मौत सामने दिखने के पहले तक रामजी को भगवान मानने को तैयार थे...? क्या कंस और कौरवों ने अपने अंतिम समय के पहले तक कृष्ण की हकीकत को स्वीकारा...? यहाँ तक कि कृष्ण को अपने अर्जुन जैसे नजदीकी तक को अपना सत्य महसूस कराने के लिए लम्बा गीतासार देने के साथ अपना विश्वरूप दिखाना पड़ा। यदि देखा जाये तो गांधी के कुछ बनने एवं होने का समय अब आया है, जब उनकी असली अग्नि परिक्षा हो रही है...! जिसके अंर्तगत आज उनके ही देश में उनके ही लोगों द्वारा उन की मान्यता पर प्रश्न खड़े करके उन्हें दुनिया में चर्चा का विषय बना दिया...! भले ही यहाँ उनके बारे में एक विशेष मानसिकता से अनर्गल प्रचार कर-कराके उनकी छवि खराब करने का प्रयत्न किया जा रहा हो, परन्तु इसके विपरीत दुनिया में वे सत्य अहिंसा के मसीहा के रूप में स्थापित हो रहे हैं। दुनिया में जितना मान-सम्मान गांधी को मिला है वैसा एक मत से किसी पैगंबर या ईश्वर अंश अवतार तक को आज तक नहीं मिला...! यदि गांधी पर खड़े किये प्रश्नों का संतोषप्रद उत्तर अपने ही देश में नहीं दिया गया तो याद रखना चाहिये कि बार-बार और जोर से बोला झूठ भी सच मान लिया जाता है! मान लिया जायेगा!

यदि गांधी सच में विशिष्ट आत्मा थे, तो उनकी बात करने वालों को डरने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। एक दिन दूध का दूध और पानी का पानी सामने आ जायेगा। साँच को आँच कहाँ...? बल्कि उनके बारे में कुंठित मानसिकतावश जितने अधिक धूर्ततापूर्ण राजनीतिक प्रश्न खड़े करके उनका चरित्र हनन करने की कोशिश की जायेगी, वे उतने ही ऊपर उठते हुए ईश्वर के अंश अवतार स्थापित होते जायेंगे। सबसे धूर्त जीव कौआ माना गया है...परन्तु वर्तमान वेश्याई राजनीति में वह भी कहीं नहीं लगता...! लेकिन धूर्तता हमेशा सफल नहीं होती...! क्योंकि भगवान से बड़ा कोई नहीं हो सकता! गीतामाता में भगवान कहते हैं-' द्यूतं छलयतामस्मि...।'मैं छलियों में जुआ हूँ। मतलब उनसे बड़ा छलिया कोई नहीं! लेकिन जब कोई कर्म भले ही वह तमोगुणी हो ,परन्तु सर्वहारा के हित में किया जाये तो वह ईश्वर का वरदान बन जाता है।'जाको राखे सांईया मार सके न कोय।'

जब देवों के देव इंद्र के बेटे धूर्त जयंत(कौआ)... ने भगवान राम के सामने अपनी धूर्तता दिखाई तो उसे अपनी एक आँख गंवानी पड़ी थी...! भगवान (सत्य) की माया इतनी अबूझ है कि जब काकभुशुण्डी जैसे भक्त की बुद्धि भगवान राम की बालक्रीड़ाओं को देख कर भ्रमित हो गयी...तब भगवान ने खेल- खेल में उसे पकड़ने के लिए मात्र अपना हाथ बढ़ाया तो वह अपनी जान बचाते हुए सातों लोकों के चक्कर लगा कर शरण तलाशता रहा...। जब भगवान शिव पत्नी माता सति रामजी के भगवान होने पर शक कर सकती हैं, प्रश्न उठा सकती हैं, तो फिर इस घोर कलियुग में रोज हर क्षण ठगे जाने वाला आम मानव गांधी के सत्य को आसानी से कैसे स्वीकार कर सकता है...?

यदि हम फ्रायड को पढ़ें तो लगता है कि - प्रत्येक प्राणी पैदाइशी राजनीतिज्ञ होता है! मतलब अपनी इंद्रियों के वशीभूत होकर इस सृष्टि में जो संभव है , वो सब कुछ पाने का प्रयास करते हुए उस पर अपना कब्जा बनाये रखने की कोशिश करता है। यहाँ तक कि छीन कर उसे हासिल करना चाहता है! राजनीति यानी सृष्टि में प्रवेश करने के बाद स्वच्छंदरूप से बिना किसी नियंत्रण के समस्त जीव-अजीवों पर अपना प्रभुत्व बनाये रख कर एक छत्र राज स्थापित करने का प्रयास करना है...! जिसे आज की राजनीतिक भाषा में रणनीति कह सकते हैं! कूटनीति ...! लेकिन जब यही जुगाड़ समस्त प्राणियों के कल्याणार्थ लगाई जाये तो उसे धर्मशास्त्रों के अनुसार 'नीतिशास्त्र' कहा गया है- नारदनीति, विदुरनीति, शुक्राचार्य नीति, रामराज्य नीति कृष्ण नीति...इसके उदाहरण हैं! यदि गौर से अध्ययन किया जाये तो विभिन्न मजहबों के धर्मग्रंथ किसी 'राजनीति शास्त्र' से कम नहीं हैं- सृष्टि की राजनीति , जीवन की राजनीति...! असुरों को शुक्राचार्य और देवताओं को बृहस्पति जी जैसे राजनीतिज्ञाचार्य रखने पड़े...! इस युग में चाणक्य नीति चली आ रही है। बस, तब और अब में इतना फर्क है कि उस समय राजा की जो नीति होती थी ,वह प्रजा और राष्ट्र के हितार्थ हुआ करती थी , जो आज बदल कर सत्ता बनाये रखने के लिए निरंकुश अधिनायकवादी बन कर रह गयी है। जो 'वाद' के नाम का मुखौटा लगा कर खेली जाती रही है- मार्क्सवाद ! मायोवाद! लेनिनवाद! समाजवाद! वामवाद ,दक्षिणवाद , मध्यवाद...! जिसने आजादी के बाद अपने यहाँ गांधीवाद के नाम से जगह ले ली...! जिसकी वजह से ही गांधी आज बेमतलब राजनीति के मोहरा बने हुए हैं।

यदि देखा जाये तो जैसे ही मानव को 'महतत्त्व' का अहसास हुआ उसने अपना एक छत्र प्रभुत्व बनाये रखने के लिए 'परिवार' नामक बंधन का जाल निर्मित कर दिया, जिसका स्वामी बन कर वह राज सके...! फिर जैसे-जैसे उसकी महत्वकांक्षा बढ़ती गयी उसने समाज ,जात बिरादरी नामक कैद बना दीं...! इसके बाद धर्म एवं राष्ट्र के रूप में व्यापकतौर पर अपनी साम्राज्यवादी मानसिकता का फैलाव करता चला गया...! और ये सब के सब आज जीवन की राजनीति के जीवंत 'वर्कशॉप' के रूप में कार्यरत हैं! राजनीति के अखाड़े...! मतलब , बिना दूसरों पर 'राज' किये इस सृष्टि में अपना अस्तित्व बना कर नहीं रखा जा सकता! यही 'मत्स्य सिद्धांत' है! मानव भले ही किसी व्यवस्था में रहता हो, वह किसी न किसी रूप में किसी का गुलाम है! बस, उससे बाहर निकलने के प्रयास का नाम राजनीति है...! फिर गांधी तो पैदा ही 'राज' घराने की छाया में हुए थे...। वहाँ ही पले बढ़े...तो उनका राजनीतिज्ञ होना बहुत स्वाभाविक है...! भगवान राम ने अपने राजनीतिक सूत्र - रामायण जी में रामगीता के नाम से और कृष्ण ने महाभारत में श्रीमद्भगवद् गीता के नाम से बताये हैं; उसी प्रकार गांधी के राजनीतिक सूत्रों के नाम पर 'हिंद स्वराज' को 'गांधी गीता' कहा जाये तो गलत नहीं होगा...?

राजनीति का एक नाम- धर्म है, मजहब है! लेकिन उसमें और आज की राजनीति में वही अंतर है, जो देवताई और आसुरी...राजनीति में रहा है! देवताई यानी धर्म की राजनीति- सात्विक गुणों के आधार पर लोगों के दिलो दिमाग पर राज करना...! जैसे राम राज्य में कहा गया है-"बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेदपथ लोग। चलहिं सदा पावहिं

सुखहिं नहिं भय सोक न रोग।।" और इसके विपरीत आसुरी अधर्म की राजनीति यानी- तामसी गुणों से युक्त रावणी राजनीति के बल पर लोगों के शरीर पर राज करना! गीतामाता के सोलहवाँ अध्याय में भगवान ने इस सृष्टि की दैवीय एवं आसुरी दोनों प्रवृत्तियों की विवेचना की है-"द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च।" जिसको आधार बना कर धर्मशास्त्रों ने अध्यात्म नाम कि राजनीति बतायी है, जिसका अनुसरण करके मानव इस भवसागर के सब बंधन तोड़ कर हमेशा के लिए मुक्ति पा सकता है। जिसे दर्शन शास्त्र कहा गया है।मतलब-महात्मा होना यानी अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण करते हुए आत्मा पर राज करना...।

किसी भी काल में तत्कालीन मौजूदा व्यवस्था से बाहर आने का प्रयास या उसका विरोध करना राजनीति के बीज का अंकुरण समझना चाहिए...! मानव जीवन में जिसकी शुरूआत माँ की कोख से हो जाती है- जब सबसे पहले गर्भस्थ शिशु हलचल शुरू करता है , फिर हाथ पैर मार कर और घूम फिर कर अपना अस्तित्व महसूस कराता है। परिपक्व हो जाने पर सारी बंदिशें तोड़ कर बाहर आने का प्रयत्न करता है और सफल होता है। यही नहीं पैदा होते ही वह ऱो-रो कर इस सृष्टि में अपना पहला विरोध दर्ज करता है...! बस, फिर शुरू हो जाता है उसका सब कुछ पाने के लिए संघर्षपूर्ण जीवन... मृत्यु तक!

महात्मा के रूप में कोई पैदा नहीं हुआ। भगवान और पैगम्बर भी ...! उनमें से विरले ही हैं जिन्हें उनके सामने मान्यता मिली हो,वरना उनके जाने के सैंकड़ों बरसों बाद ही उनका सत्य स्थापित हो सका है। फिर गांधी उससे अलग कैसे हो सकते हैं? उस नज़रिये से यदि गांधी के बचपन का अध्ययन किया जाये तो पायेंगे कि बचपन से ही उनमें विशिष्ट होनहार आत्मा के गुण नज़र आते हैं...! वे बचपन से ही अपने भाई बहिनों के राजशाही रहन-सहन एवं सोच के विपरीत अकेले-अकेले दब्बू से अपनी उम्र के लड़कों के साथ खेल कूद न करके घर में आकर अपनी धर्मात्मा माँ का पल्लू पकड़ कर उनके साथ मंदिर-मंदिर घूमा करते थे...! सत्यवादी हरिश्चंद्र की कथा सुन एवं नाटक देखकर तथा श्रवण कुमार की कहानी सुन कर उस पर चलने का मन बना रहे थे...! बचपन में गांधी की सारी गतिविधियाँ एवं सोच होनहार आध्यात्मिक आत्मा होने के पक्ष में जाते हैं। ऐसा लगता है जैसे गीतामाता में 13वें अध्याय (8,9,10,11,12) में जो कहा गया है, गांधी उसी का अनुकरण कर रहे हों- "विविक्तदेशसेवित्वमरतिर्जनसंसदि।।" मतलब-'विनम्रता , दम्भहीनता, अहिंसा, सहिष्णुता, सरलता आदि गुणों के साथ एकांत स्थान में रहने की इच्छा , जन समूह से विलगाव आत्म-साक्षात्कार की महत्ता को स्वीकारना तथा परम सत्य की दार्शनिक खोज आदि सच्चा ज्ञान है, बाक़ी सब अज्ञान है।' गांधी के इस कर्म को स्वधर्म की राजनीति कहा जा सकता है!

गांधी के जीवन का इस मार्ग पर चलने का पहला सार्वजनिक राजनीतिक कदम वह माना जाना चाहिए जब उन्होंने स्कूल में इंसपेक्टर द्वारा किये जा रहे निरिक्षण के समय कक्षा अध्यापक के कहने और बताने के बाद भी नकल जैसा गलत काम नहीं किया...! जिसकी बजह से वे पूरी क्लास में अकेले हँसी के पात्र बने...और बाद में अध्यापक के गुस्से का शिकार हुए...! ऐसे ही आचरण राजनीति के महत्वपूर्ण अंग माने गये हैं।

किशोरावस्था में वे अपनी जिज्ञासा संतुष्ट करने के लिए एक दोस्त की संगत में आकर परिवार की संस्कृति के खिलाफ जाकर गलत आचरण करने को तैयार हो गये...! लेकिन सच्चाई का अहसास होते ही उन्होंने निडरता से सब कुछ अपने पिताजी के सामने रख दिया। इसे भी सत्य के मार्ग की राजनीति करने का एक अंग माना जाना चाहिए! इसके बाद जब उन्होंने बैरिस्टर की पढ़ाई के लिए विदेश जाने का निर्णय लिया, तब रूढ़ीवादी समाज ने उन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया, लेकिन उन्होंने उसकी परवाह नहीं की। यह उनका समाजिक स्तर पर अंधविश्वास एवं कुरुतियों को तोड़ कर सामाजिक कैद से बाहर निकलने का प्रयास था। लंदन प्रवास के दौरान कई बार उनके

सामने धर्म एवं संस्कृति परिवर्तन करने के लिए बड़े-बड़े प्रलोभन आये परन्तु वे स्वधर्म की वकालत करते हुए अडिग बने रहे...। जब बैरिस्टर बन कर वापस हिंदुस्तान आये तो वे अदालतों में झूठ फरेब की बहती गंगा में हाथ धोने के बजाय सच का रास्ता अपनाते हुए सबसे अलग चलते रहे...! यही नहीं जब अपने बड़े भाई के एक काम के लिए संबंधित अंग्रेज अधिकारी से मिलने गये तब उस गोरे ने उन्हें धक्के देकर अपने ऑफिस से बाहर करवा दिया...!उस समय उन्होंने उसका समुचित विरोध किया...! इन घटनाओं को पूत के पैर पालने में दिखना माना जा सकता है।

सार्वजनिक रूप से उनका विश्वस्तरीय पहला राजनीतिक कदम साउथ अफ्रीका में मानना चाहिए, जब वे पहली बार नेटाल की अदालत में पगड़ी लगा कर गये तो वहाँ के मजिस्ट्रेट नें रंगभेदी मानसिकता के कारण उनसे पगड़ी उतारने को कहा...! लेकिन वे उसे नहीं उतार कर विरोध करते हुए बाहर चले गये...! इसी प्रकार जब उन्हें रेलयात्रा के समय प्रथम श्रेणी के डिब्बे से धक्के देकर नीचे फिकवा दिया गया तो उन्होंने गोरों के देश में अकेले अपनी जान पर खेल कर उसका विरोध किया...और आगे की यात्रा प्रथमश्रेणी डिब्बे में ही की। बस, फिर तो उनके जीवन में यह सिल- सिला चलता रहा...! उनके राजनीतिक जीवन पर चर्चा करना किसी राजनीतिक दर्शन से कम नहीं...! इसके बाद ही यह आकलन किया जा सकता है कि वे कितने राजनीतिज्ञ थे और किस प्रकार की कौनसी राजनीति किसके लिए कर रहे थे...!

क्या भगवान द्वारा बताये गीतासार के अनुरूप कर्मयोग का रास्ता अपना कर स्वधर्म निबाहने की राजनीति करना गलत है...? अधर्म है? क्या महात्मा होने में बाधक है? क्या उनके कर्म हिंदुस्तान की संस्कृति के खिलाफ़ रहे? क्या राजनीतिज्ञ होना पाप है...! तो फिर भगवान कृष्ण के बारे में क्या कहा जायेगा...! जिन्होंने गीतामाता में कहा है-'...कवीनामुशना कविः।।'मैं महान विचारकों में उशना यानी शुक्राचार्य हूँ...! पौराणिक ग्रंथों के अनुसार सुर-असुर संग्राम में शुक्राचार्य हमेशा असुरों के राजनीतिक गुरु रहे...! उन्हें सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ माना गया है...!

गांधी जैसे महात्मा पर अनर्गल प्रश्न खड़े करने वालों के लिए भगवान ने गीतामाता में कहा है-'अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।' 'जब मैं मनुष्य रूप में अवतरित होता हूँ, तो मूर्ख मेरा उपहास करते हैं।' जब ईश्वर अवतार तक शक की नज़र से देखे जा सकते हैं ,तब कर्मवीर गांधी कैसे अपवाद स्वरूप बच सकते हैं?